(3.) (1)

Lecture series NO- 46.

Online class.
Date - 18/5/2020
Time -

Topic.

(1) non moral actions.

Dr. Sarita Kumari
Depart. of philosophy (H.)
B.A part - II
paper - (5.)
A. N. D. College Shahpur Patory, Samastipur.

Ans. -> नीतिशून्य कर्म (Non - moral action) :- नीतिशून्य कर्म वे हैं, जिन्हें न पाप और न पुण्य न धर्म और न अधर्म, न उचित और अनुचित कहा जा सकता है, वे नैतिकता के क्षेत्र के बाहर हैं। उनका नैतिक निर्णय नहीं हो सकता,

इसलिए कि उनमें नैतिक गुणों का अभाव है।
नीतिशून्य का अर्थ यह नहीं है कि ऐसे कर्म खराब हैं। उनमें इच्छा और संकल्प का अभाव रहता है। अतः उनका नैतिक निर्णय नहीं होता साधारण तौर यह कहना आर्च आश्चर्य चकित ही प्रतीत होता है।

P.T.O..

सारांशत: यह कहा जा सकता है कि अनैच्छिक कर्म ही नीतिशून्य कर्म है।

नीतिशून्य कर्म निम्न प्रकार के होते हैं :⟹

(1) निर्जीव पदार्थों के कर्म :- निर्जीव पदार्थों की क्रियाओं का नैतिक निर्णय सम्भव नहीं है क्योंकि उनमें (अच्छा) इच्छा का अभाव रहता है इसलिए वे नीतिशून्य कर्म हैं।

बादल के समय पानी बरसने को, सूर्य से जाड़े में गर्मी होने को या गर्मी से हवा से ठंडक होने को उचित या अनुचित पाप या पुण्य नहीं कहा जा सकता इनमें नैतिक गुण का अभाव रहा है।

(2.) पौधों या पशुओं के कर्म :- पौधों या पशुओं की क्रियाओं को नीतिशून्य

है। उनमें भी इच्छा का अभाव रहता है। इसलिए वो आचारशास्त्र के क्षेत्र से बाहर हैं। नीतिशून्य है। उनमें भी इच्छा का अभाव रहता है। इसलिए वे आचारशास्त्र के क्षेत्र के बाहर हैं। कुत्ते द्वारा किसी का रोटी छिन जाना नीतिशून्य कर्म कहा जा सकता है।

इसलिए इसी प्रकार के कर्म साधारण तौर एवं उदाहरण द्वारा नीतिशून्य कर्म समझा सकते हैं।

नीतिशून्य कर्म हैं, इसी प्रकार किसी वृक्ष के गिराए जाने से किसी मकान का ध्वस्त हो जाना भी नीतिशून्य कर्म है। इन कर्मों पर नैतिक निर्णय नहीं किया जा सकता है।

(3.) अबोध बालकों को कर्म :→ वैसे बालकों की क्रियायें जिन्हें अपना या दूसरे का ज्ञान नहीं हुआ है, नैतिक नहीं होता। बच्चा में धर्म-अधर्म, उचित-अनुचित के ज्ञान का विकास नहीं होता। etc. END